

holen: उद्धार ततो नीलः शरं तस्य कलेवरात् R. 4, 22, 21. निमज्जत-
स्तान्ध कर्णसागरे विपन्ननावो वणिजो यथाविव । उद्धारे नौभिरिवार्ण-
वाद्भयैः MBh. 8, 4202. एतद्विन्तं तदभवद्युद्धे (sic) 14, 1932. in die Höhe
—, zu Ehren bringen: साम्राज्यं निम्नुद्धार सकलं संगतिशास्त्रं च यः in
einer Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 7, 10, 37. — Vom desid. उद्दि-
धीर्षा (s. d.) und उद्दिधीर्षु Siddh. K. 154, b, 1.

— उप 1) tragen, stützen: यत्र स्तूणा क्षिप्रमयी । मणिरत्नमयी चान्या
प्रासादमुपधारयत् MBh. 4, 1765. बन्धमुपधार्य viell. darunter halten Suçr.
1, 56, 20. — 2) dafür halten, betrachten als, ansehen für: तास्तु गायत्र्य
उपधारयेत् RV. Prāt. 17, 3. सत्त्वं तदुपधारयेत् M. 12, 27, 29. प्रशस्तंश्चतु-
रः (विवाहान्) पूर्वान्त्राक्षणास्येपधार्य MBh. 1, 2963. न करिष्यसि चेदेवं
मृतां मानुषधार्य 7805. 3, 14301. 7, 4718. R. 3, 46, 15. 69, 12. 5, 72, 17.
Bhāg. P. 8, 4, 11 (Burnouf: réfléchir). एतथोनीनि भूतानि सर्वाणीत्युपधा-
र्य Bhāg. 7, 6, 9, 6. MBh. 13, 4144. — 3) vernehmen, hören, erfahren:
अस्मै चोपदिश्यमानं वयमप्युपधारिष्यामः Suçr. 1, 3, 4. 8. 13, 1. 195, 5
(med.). MBh. 14, 467. Bhāg. P. 1, 8, 11. 2, 4, 1. 4, 8, 67. 6, 2, 1. 18, 70. पुरु-
षो रामचरितं श्रवणैरुपधारयन् 9, 11, 23. merken, wahrnehmen: विपमग-
तां स्वशिविकां रूहगण उपधार्य 5, 10, 2. शयानं सुचिरं बालमुपधार्य 6, 14,
45. — 4) nachdenken über, erwägen: घटानां मन्त्रिणां मध्ये मन्त्रं राजोप-
धारयेत् MBh. 12, 3204. सुशिक्षितैर्भाष्यकवाविशारदैः पुरुष कृत्यामुपधारये-
च्च 3837. — उपधरेरन् in der Stelle यस्य पश्येत् नोपधरेरन् न्यान्वाभिन्नान्वि-
नित्तैस्तैः सो ऽप्येत्येवमेव यजेत Āc. C. 9, 11 viell. fehlerhaft für उपधरेरन्.
— Vgl. उपधारण, उपधृति.

— अनुप दazuhinhalten: उपह्रयमानायामिडायामनुपधारयेत् Līṭ. 2, 3, 2.
— नि 1) niederlegen in, bringen in, zu: अस्मे रायं नि धारय RV. 1,
30, 22. 8, 84, 8. 10, 19, 3. 4, 2, 12. ग्रामान् पक्वं शच्या नि दीधः 6, 17, 8. —
2) bestimmen, machen zu: प्र या मर्क मृकान्ता ज्ञायमाना घोरा मर्तीय रि-
पवे नि दीधः RV. 6, 67, 4. — 3) bewahren, behalten: नियणं परमेष्ठिधि-
ष्टे न्यवोधयेदेव निधारयेति Bhāg. P. 3, 2, 22. — 4) pass. (6te Klasse?) sich
ducken: नि वा यामीय नानुपि दधे RV. 1, 37, 7.

— निम् 1) herausheben, aussondern, absondern, vor Andern hervor-
heben: निर्धार्यमाण P. 2, 3 42, Sch. 5, 3, 92, Sch. — 2) bestimmen, genau
angeben: निर्धारित ङाङ्क. zu Brh. Ā. Up. p. 93. 110. 115. 319. किमल-
म्ब्रताम्बरविलम्बमधः किमवर्तितार्धमवनीतलतः । विससार (so liest der
Schol.) तिर्यग्व दिग्भ्य इति प्रचुरिभवन निर्धारि तमः ङाङ्क. 9, 20. Vgl. नि-
र्धार u. s. w. — 3) zusammenhalten: वायुनिर्गच्छति तं निर्धारयेत् Schol. zu
VS. Prāt. 1, 54 in Ind. St. 4, 114. — desid. zu bestimmensuchen: ब्रह्मणः सत्त्वं
निर्दिधारयिष्यत् ङाङ्क. zu Brh. Ā. Up. p. 417.

— परि herumtragen, tragen: (नद्याः) एतस्याः सलिलं मूर्ध्ना वृषाङ्कः प-
र्यधारयत् MBh. 3, 10907. दश मासान्परिधृता (im Mutterleibe getragen)
ज्ञायते 12, 12529. — AV. 19, 24, 1 ist viell. अधारयन् st. अधारयन् zu lesen.

— प्र 1) wohl so v. a. दाड धर Strafe verhängen: तस्मिन्नाज्ञा प्रधा-
रयेत् MBh. 12, 9566. परेणापकृता राजा तस्मात्सम्यक्प्रधारयेत् 9569. —
2) मनः seinen Sinn auf Etwas (dat.) richten, beschliessen: बधाय कर्णा-
त्मजस्याय मनः प्रदधे MBh. 8, 4336. — 3) im Gedächtniss haben: (मृक-
व्यानम्) लोके वज्रधा प्रधारितम् MBh. 5, 4120. — 4) bei sich denken:
एवं प्रधार्य MBh. 1, 3581. — प्रधारयन्तु Āc. C. 9, 12 fehlerhaft für प्र
धारा यन्तु.

— संप्र 1) übergeben: द्रौपदीमाष्टिपेणाय संप्रधार्य MBh. 3, 11741. —
2) बुद्धिम् seinen Sinn, seine Gedanken auf Etwas richten, beschliessen:
समुद्रस्य तपे बुद्धिर्भवद्भिः संप्रधार्यताम् MBh. 3, 8772. — 3) mit oder ohne
Menschen, बुद्ध्या, कृदये im Geiste erwägen, in Betracht ziehen, nachden-
ken, eine Betrachtung anstellen: सर्वाण्येतानि संधाय मनसा संप्रधारयेत्
MBh. 14, 1148. R. 2, 109, 21 (Gorr. 118, 21). 4, 38, 17. संप्रधार्य तमं बुद्ध्या
ततस्त्वं योद्धुमर्हसि MBh. 7, 1540. इत्येवं कृदये संप्रधार्य Pāṇāt. 8, 14. घ-
नार्थमार्थकर्मणामर्थं चानार्थकर्मिणम् । संप्रधार्यब्रवीद्वाता न समौ नासमावि-
ति ॥ M. 10, 73. धर्मार्था संप्रधार्य MBh. 5, 3436. 12, 9027. 13, 2567 (lies
धार्य). R. 3, 39, 2. 4, 8, 29. 16, 50. 5, 92, 14. Kām. Nitis. 11, 69. संप्रधार्य
महाराज यत्नेन तत्समाचर MBh. 2, 1652. 3, 1101. 8, 1400. 1405. 12, 3807.
13, 1911. Hariv. 7295. R. 2, 96, 54 (Gorr. 103, 53). Kathās. 18, 38. एवं
संप्रधार्य Pāṇāt. 22, 25. 84, 7. 193, 22. 235, 8. so v. a. festsetzen, beschlies-
sen ङाङ्क. 9, 60. — Vgl. संप्रधारण, णा.

— प्रति 1) aufhalten: तस्मादेनाः स्यन्दमाना न किं चन प्रतिधारयति
ङाङ्क. Br. 3, 9, 4. ०ते 5, 3, 4, 7. — 2) aufrechthalten: प्रतिधारयति वै
ग्रीवा श्रवो शिरः Āit. Br. 3, 2.

— वि 1) auseinanderhalten; scheiden, vertheilen; anordnen: वि धार्य
योनं गर्भाय धातवे AV. 6, 81, 2. अधि दाने व्यप्वनीरधार्यः RV. 2, 13, 7.
तं समुद्रं प्रथमो वि धार्यो देवेभ्यः सोम मत्सरः 9, 107, 23. पृथैर्यवी प्र-
थमो वि धारयत् 10, 92, 10. ङाङ्क. Br. 8, 6, 1, 3. 14, 1, 3, 23. Kauç. 71. त-
स्मात्सर्वणि कार्याणि दण्डेनैव विधारयेत् so v. a. betreiben, leiten MBh.
1, 5549. आदिमध्यावसानतः प्रच्छन्नं विधारयेत् so v. a. gehe heimlich zu
Werke 12, 3809. विधृत auseinandergehalten, gesondert: ग्यावापयिवी
विधृते तिष्ठतः ङाङ्क. Br. 14, 6, 8, 9. 13, 3, 2, 4. MBh. 13, 7070. विधृता आ-
सते TBr. 1, 8, 4, 2. नासिकया चक्षुषी विधृते TS. 2, 3, 8, 2. 3, 41, 2. राज्ञो
मनुष्या विधृताः 6, 2, 2. MBh. 12, 9129. vertheilt, auseinandergebreitet:
विधृतकञ्जलचारुनेत्रा Kaurap. 16. — 2) fernhalten: वि धार्यास्मदघा
द्वेषासि Taitt. Ā. 6, 9, 11. तं चापि विधृतस्ताभ्यां ज्ञातवैरेण चेतसा
Hariv. 4233. मम चेनं वरं कस्माद्विधारयितुमिच्छसि vorenthalten R. 2,
13, 3. — 3) festhalten, anhalten, aufhalten, zurückhalten, verhalten:
कलविधृता यमुना Hariv. 6787. अंशुकपल्लवेन विधृतः Amar. 79. विधृता
वाला पदासि मया 83. कालः सर्वेषु भूतेषु चरत्यविधृतः समः MBh. 1, 243.
विधार्य सर्वे गृह्यन्तां ममैते गृह्यन्तः Hariv. 8844. वेगं वेगवतो राजंस्त-
स्यै वीरे विधारयन् 3, 676. न च वेगान्विधारयेत् Suçr. 2, 146, 18. — 4)
halten, tragen: पृष्ठेन — विधार्य गोत्रम् Bhāg. P. 2, 7, 13. (स्वगृहम्) म-
णिस्तम्भसूत्राणामयुतैर्विधृतम् Hariv. 9012. 7318. ङाङ्क. zu Brh. Ā. Up.
p. 113. सौदासपत्नीविधृते — मणिकुण्डले MBh. 14, 1654. स्रजं च विधृता
म् Bhāg. P. 6, 18, 47. कृत्त R. 3, 9, 6. आयुध 30, 41. कार्मुक MBh. 8, 1563.
असि Ragh. 12, 40. — Bhartr. Suppl. 23. Glr. 10, 15. ङाङ्क. 9, 53. विधृतं स्वी-
देणापि घ्नति पुत्रं स्वकं रूपा (योपितः) Pāṇāt. IV, 61. शिरसा विधृता
नित्यम् — केशाः zugleich mit der Nebenbed. hoch in Ehren gehalten
1, 94. अत्रैकगवां तथा । सदृशानि वपूष्यन्ते तत्र तत्र व्यधारयन् trugen
so v. a. hatten MBh. 9, 2476. aufrechthalten, erhalten: कत्येव देवाः प्र-
जा विधारयन्ते Praçnop. 2, 1. act. 2. 3. विपुलकृद्वैरीशैः कैश्चिज्जगज्जनितं
पुरा विधृतमपैः Bhartr. 3, 58. नष्टाः कालेन पैर्वेदा विधृताः स्वेन तेजसा
Bhāg. P. 8, 1, 29. — 5) मनस् seinen Sinn, seinen Geist richten auf:
विमुक्तसङ्गं मन आदिपुरुषे — व्यधारयत् Bhāg. P. 1, 9, 30. — 6) bewah-